शतपत्रम्

(A POEM OF 115 VERSES ON POETRY)

रचयिता

रेवाप्रसाद द्विवेदी 'सनातनः'

काशीहिन्दूविश्वविद्यालयः

वाराणसी

शतपत्रम्

[कविताविषयकं संस्कृतपद्यशतकम्]

रचयिता

रेवाप्रसाद-द्विवेदी 'सनातनः'

प्रकाशकम्

कालिदाससंस्थानम्

वाराणसी

१९८७

शतपत्रम् : ŚATAPATRAM
A CENTURY OF SANSKRIT VERSES
ON POETRY

© लेखकस्य (of Writer)

मूल्यम् रु० ३०.००
Price Rs. 30.00
1987 (21 September 1987)

प्रकाशक : PUBLISHER
सदाशिवकुमारद्विवेदी
सचिवः
कालिदाससंस्थानम्
वाराणसी 221005

SADĀŚIVA DWIVEDI
Secretary
KALIDASA SANSTHANA
VARANASI 221005
Phone : 63382

मुद्रक :
तारा प्रिंटिंग वर्क्स, वाराणसी

प्रावेशिकी

पितृचरणैः प्रा० रेवाप्रसादद्विवेदिभिः कविताशतकनाम्ना काव्यमिदं १९८५ वर्षे दिल्लीपुर्य्यामायोजिते वाल्मीकिसमारोहनाम्नि विश्वकवि-सम्मेलने श्रावितम्। तदिदं साम्प्रतं शतपत्रनाम्ना संमुद्रय प्रकाश्यते।

अत्र हि दर्शनम्, ऐतिह्यम्, उक्तिश्चेति त्रितयमपि समरसम्। अतश्चार्थवाद एष कवितायाः। लक्षणशास्त्रत्वमप्यस्याऽव्याहतम्, सर्वेष्वपि पद्येषु कवितायास्ताटस्थ्येन लक्षितत्वात्। स्वतन्त्राणामपि वैवशीरूपपार-तन्त्र्यजनकं बन्धमुक्तं प्रणयद्रुतहृदयसंविधानं कवितेति तु तत्र सर्वत्राऽ-नुगतम्।

टिप्पणीभिः प्रकाशितानि मर्माणि भाषानुवादश्च काव्यमिदमधिकमर्पकं विदधति।

तदिदं कालिदाससंस्थानस्य तृतीयं पुष्पम्। आददीरन् सहृदया सादर-मिदमिति श्रद्दधे।

२१ सितंबर, १९८७ **सदाशिवः**

ईक्षा

कविरस्मि न वेति नैव वेद्मि, कवितां किन्तु न नो खिलीकरोमि ।
सरितापि कदाचिदुह्यते नौरपटौ सत्यपि नाविकस्य सूनौ ॥१॥

सखिभिर्यदि दर्पणः पुरस्तान्निहितः, किन्नु करोमि, लज्जयापि ।
मम रूपमहं निरूपयामि, प्रतिबिम्बेष्वनुमाय बिम्बलेखाम् ॥२॥

अभिधान्वययोः क्रमद्वयं यत्, कविकर्मण्यभिधानुजायतेऽत्र ।
रसिकस्य तु संविदि प्रकाशानभिधा प्राग् भजते ततोऽन्वयादिः ॥३॥

प्रददाति यदाभिधा तु काव्यं, द्विजतां तत्र तदाभिवीक्ष्य तुष्टा ।
यदि नृत्यति शारदा, कृतार्था कविता कालकलान्ववायसूता ॥४॥

कलना ननु कालमुत्प्रसूते, कलनैवातनुते कलां, तदीया— ।
तनयद्वितयीयमेव रम्या, कविताकामदुघां कवौ प्रसूते ॥५॥

कलया निरपेक्ष्यकालबुद्ध्या, नटनं शून्यकलेवरे क्रियेत ।
निरपेक्ष्यकलाभिरूपलक्ष्मीरथ कालोऽपि करालतां श्रयेत ॥६॥

कलया सुभगम्भविष्णुरार्यः कवितार्थत्वमुपैति काल एव ।
अथ कालविलासतर्पितान्तःकरणा सापि कलैव हन्त काली ॥७॥

अनयोरनुलोमतामदिष्ठं, प्रतिलोमत्वकरालितं च सिद्धेः ।
मिथुनीभवनं महाकवीन्द्रप्रतिभा—क्रीडनकीचिकीर्ष्यतेऽद्धा ॥८॥

असकौ हि कला सनातनीया, कवितायां निभृतं विनिर्मितायाम् ।
यदि तत्र समीक्षका वधानं दधते वास्तवमस्य मे लभन्ते ॥९॥

न हि पर्युषितं न वाप्यपक्वं, परिपाकाभिमुखीनमेव किन्तु ।
कवितायितुमुत्सहेत तत्त्वं, प्रतिबिम्बेन कषायितं निजस्य ॥१०॥

न हि बाष्पमथो न लोचनानामरुणत्वं कवितावधूं जुषेताम् ।
द्रुतिरेव तु सांविदी सखीत्वं, प्रतिपद्येत रसप्रभोग-पुत्री ॥११॥

इति भूमिकया कवित्वदुर्गं प्रविविक्षोर्यदिवा प्रविष्टकस्य ।
अनपायशुभा वचःप्रवृत्तिर्यदभून्मे ननु तामिहोल्लिखेयुः ॥१२।२६॥

—रेवाप्रसादस्य द्विवेदिनः 'सनातनस्य'

॥ श्रीः ॥

सनातनकवि-श्रीरेवाप्रसादद्विवेदि-विरचितं

शतपत्रम्

•

कविता हृदयस्य संविधानं
तरलस्य प्रणयेन मुक्तबन्धम् ।
वृणते परतन्त्रतां स्वतन्त्राः
सुहृदो यत्र विना पराभियोगम् ॥१॥

हृदयस्य न तु संसदादेः, बन्धनात्मक खलु तत् । इदं पुनर्बन्धमोक्षकृत्, यत्र प्रणयद्रुतिस्तत्र स्वतन्त्रा अपि परतन्त्राः । स एव समाजसेतुः ।

प्रणयद्रुतचित्तसंविधानं कविताभूयमुपैति मुक्तबन्धम् ।
दधते स्वयमेव यत् स्वतन्त्रा अपि पाशानुजकल्पहारभूतम् ॥ इत्यर्थः ।

कविता प्रणय-तरल हृदय का (न कि संसद् का) एक ऐसा मुक्त-बन्ध (न कि बन्धनकारी) संविधान है, जिसमें किया करते हैं स्वतन्त्र सुहृज्जन परतंत्रता का वरण, वह भी पराभियोग के विना ॥१॥

प्रणय = विस्रंभ, याचना और प्रेम । सुहृद् सहृदय भी । पराभियोग = दूसरे के द्वारा किया गया अभियोग तथा परा या अपरा का अभियोग ॥

कविता हृदयस्य संसिसृक्षा
प्रतिबुद्धस्य रहः कुतोऽपि हेतोः ।
वचसामधिदेवता यदीयं
प्रतिबिम्बं परिरभ्य नर्नृतीति ॥२॥

एकान्त में किसी भी कारण जाग उठे हृदय की जो संसिसृक्षा वह है कविता । नाचती रह जाती है वाग्देवी यदि उसका प्रतिबिम्ब पा जाती है ॥२॥

कविता स्वगतं कवेः स्वबिम्ब-
प्रतिबिम्ब-प्रतिबिम्बनं वचःसु ।
अत एव तु तां विभावयामो-
ऽपरलभ्यं परमाऽऽत्मनो विलासम् ॥३॥

परं केवलम् । सरस्वती हि प्रसवितुरेव क्रोडे तिष्ठति ब्रह्मणः ।

कवि का स्वगत है कविता । वह स्व (कवि + आत्मा) के बिम्ब के (चित्त में पड़े) प्रतिबिम्ब का प्रतिबिम्बन है शब्दों में । इसीलिए हम इसे अन्य के द्वारा अलभ्य आत्मविलास मानते हैं ॥३॥

कविता चितिसीमनि स्वताया
अमृतस्रोत उदस्तमृत्युतन्त्रम् ।
उपदीकृत - विश्वभूति - योगो
ममकारः कविता पराम्बिकायाः ॥४॥

कविता स्वताका अमृतमय स्रोत है जो फूट पड़ता है चिति के गर्भ में और जो हुआ करता है मृत्युका निवारक । अथवा पराम्बा की ममता है कविता, देने के लिए उतावली रहती है जो, विश्ववैभव का उपहार ॥४॥

कविता परमस्य हृत्सरोजे
प्रतिभातस्य नु कस्यचित् प्रियस्य ।
प्रतिशब्द उपह्वरेऽभिसर्त्तुं
त्वरमाणस्य रसाय रासभिक्षोः ॥५॥

उपह्वरे रहसि ।

कविता तो पास आ रहे परम प्रिय की हृत्कमल में उभर उठी आहट है । परम प्रिय जो हुआ करता है एकान्त अभिसार के लिए आतुर और रस के लिए रासभिक्षु ॥५॥ रास अर्थात् द्वैतसापेक्ष रसलीला ।

कविता प्रलयश्चितेः कुतश्चित्
प्रतिपन्नः प्रकृतेः कलाविलासात् ।
प्रतिबिम्बनयोग उत्तरायाः
प्रतिभाख्ये मुकुरे त्रिलोकलक्ष्म्याः ॥६॥

प्रतिपन्नोऽधिगतः, लक्ष्मीः सौन्दर्यरूपापि ।

कविता है चिति का प्रलय, जो मिल पाता है प्रकृति के किसी कलाविलास में। अथवा कविता है लोकोत्तर त्रिलोकलक्ष्मी का प्रतिभा-मुकुर में होता प्रतिबिम्बन ॥६॥

कविता हृदयस्य कापि भाषा
मुखरा मौनमयी वधूर्नवेव ।
न हि शक्तिरथो न तत्र भक्तिः
प्रतिपत्तिस्तु समर्पणाय मार्गः ॥७॥

कविता है हृदय की एक ऐसी भाषा जो मुखर भी रहती है और मौन भी, नई दुलहिन की नांई। यहाँ संपूर्ण अर्पण का एकमात्र उपाय बन पाती है प्रतिपत्ति, न शक्ति और न भक्ति ॥७॥

प्रतिपत्ति=गौरव, प्राप्ति, प्रवृत्ति, प्रगल्भता तथा बोध। शक्ति=बल। भक्ति=श्रद्धातिशय।

कविता हृदयाभिधस्य धातुः
स्वरितः कश्चन शब्दसर्गबन्धः ।
अनुदात्तमुदात्त—सन्निकर्षात्
प्रचयं याति हि यत्र संहितायाम् ॥८॥

उदात्तानुदात्तस्वरितप्रचया वेदमार्गे प्रतीताः ।

हृदयरूपी ब्रह्मा का कोई स्वरित शब्द-सर्ग-बन्ध कहलाता है कविता, संहितादशा में जहाँ अनुदात्त प्रचय बनता जाता है उदात्त के संनिकर्ष से ॥८॥ प्रचय अर्थात् उदात्त के बाद आने वाले अनुदात्त। सर्गबन्ध महाकाव्य भी।

कविता हृदयस्य नाट्ययोगे
निपुणं किञ्चन वृत्तिसंविधानम् ।
निभृतस्य नु गीतिमङ्गलस्य
श्रुतिसङ्गः प्रणयप्रमङ्गलात्मा ॥९॥

वृत्तयो भारती, सात्त्वती, आरभटी, कैशिकी चेति ।

हृदय जब नाट्य के लिए उद्यत होता तब उसमें उभार लाने वाला जो एक वृत्तिसंविधान वह है कविता । निभृत मंगलगीति में श्रुति की युति है कविता । श्रुतियुति जो प्रणय के कारण और अधिक मांगलिक बन जाती है ॥९॥

कविता मणिपञ्जरे चिदाख्ये
विधृता कापि शुकी हिरण्यवर्णा ।
अनुवादकलाविचक्षणा या
रटति स्वैरमहो रहःकथां नः ॥१०॥

चिति के मणिमय पींजरे में फुदकती एक सुवर्णमयी शुकी है कविता । अनुवादकला में अत्यन्त निपुण वह रटती रहती है हमारी रहःकथाएँ स्वैरतापूर्वक ॥१०॥

कविता सुरभेः सुता सवत्सा
ननु मैत्रावरुणस्य नन्दिनी सा ।
उपतिष्ठति या स्वतो मुहूर्त्ते
विषमे दर्शयितुं प्रकाशमार्गम् ॥११॥

कामधेनु की पुत्री और मैत्रावरुण की सवत्सा धेनु है कविता । स्वयं ही उपस्थित हो जाया करती है वह विषम घड़ी में प्रकाशपथ दिखलाने हेतु ॥११॥ रघुवंश ३.४०-४१ ।

विहितं सहकारमञ्जरीभिर्-
मृदु तल्पं चितिचञ्चरीकपत्न्यै ।
कवितेति निरुच्यते प्रपन्नैर्-
वचसां नृत्यविधौ स्वतः प्रवृत्ते ॥१२॥

चितिभ्रमरी के लिए सहकारमंजरी जो मुदुतल्प बना दिया करती है उसी को कह दिया करते हैं कविता, वाणी की स्वतः प्रवृत्त नृत्यविधि पर न्योछावर रसिकजन ॥१२॥ सहकार संमिश्र भी ।

कविता मधुनाऽभिपूरितात्मा
कलशी काचन तर्पिताऽसुरौघा ।
उदवोढ स मोहिनीवपुर् यां
परमात्मापि रिरंसया शिवेन ॥१३॥

समुद्रमन्थनकथाऽत्रानुसन्धेया, यत्र शिवेन मोहिनी परिभुक्ता ।

कविता मधु से भरी वह कलशी है जिसने किया था असुरों को तृप्त और जिसे धारण किया था मोहिनीशरीरधारी परमात्मा ने भी जब जागी थी उनमें शिव के साथ प्रबल रिरंसा ॥१३॥

कविता शितिकण्ठ--कण्ठकूपाऽ-
नलदाहप्रशमाय संप्रवृत्ता ।
अविमुक्तकिशोरभाव—लेखा
प्रतिपच्चन्द्रकला रसैकमूर्त्तिः ॥१४॥

कविता तो प्रतिपच्चन्द्रकला है, जो हुआ करती है रसमात्रमूर्ति, जो कभी नहीं लांघती किशोरभाव की सीमा और निरन्तरता के साथ निरत रहा करती है नीलकण्ठ शिव के कण्ठकूप की विषाग्नि की जलन शान्त करने में ॥१४॥

नियतेर्नियतिः स्वतन्त्रताख्या
कलना वा शिवशक्तिसामरस्ये ।
कविता नटनात्मिका प्रवृत्ति-
श्चितिपीठे यदि वा नटेश्वरस्य ॥१५॥

कविता नियति की भी नियति है। कविता शिव और शक्ति के सामरस्य में रहती स्वतन्त्रता-नामक कलना है। अथवा नटेश्वर की चितिपीठ पर प्रस्तुत नटनात्मिका प्रवृत्ति है कविता ॥१५॥

कविता प्रतिमूर्च्छते विकारो-
दधये कश्चन वाडवः कृशानुः ।
कवितौषधमुत्तमं चिकित्सा-
वधि-तीर्णाय महाक्षयाय लोके ॥१६॥

कविता है निरन्तर वर्धिष्णु विकारसागर की वडवाग्नि। असाध्य क्षय की लोकसुलभ महौषधि है कविता ॥१६॥

कविता व्रतिनो गुहस्य धाम्नि
प्रतिषिद्धे गिरिजाङ्घ्रियावकात्मा ।
स हि संगमनीय इत्यभिख्यो
मणिराकस्मिकयोग-संपटिष्ठः ॥१७॥

कविता कौमार-व्रती कार्तिकेय के अप्रवेश्य धाम में उनकी माता पार्वतीजी के चरणों के अलते से बनी संगमनीय मणि है, जो अत्यन्त निपुण है आकस्मिक योग में ॥१७॥ विक्रमोर्वशीय-४ ॥

कविता नकुलस्य धर्मपत्नी
ननु तस्यैव य एष रन्तिदेवात् ।
दुरवापमवाप हेमभावं
त्रिदिवेशेष्वपि कामनाऽतिभूमिम् ॥१८॥

युधिष्ठिरस्य राजसूये नकुल एष सुवर्णभावं प्रतिपत्तुं नाशकत् ।

कविता उसी नकुल की धर्मपत्नी है जिसने रन्तिदेव से वह हेमत्व प्राप्त किया था जिसके लिए स्वर्ग के देवता भी सतृष्ण रहा करते हैं ॥१८॥

कविता स कपर्द्द ईश्वरीयो
विधुना लाञ्छितविग्रहात् तु यस्मात् ।
प्रभवत्यमरापगा त्रिलोक्याः
परमं मङ्गलमम्मयीव गौरी ॥१९॥

अम्मयी जलमयी ।

कविता वह ईश्वरीय कपर्द है जो अंकित रहता है चन्द्रकला से और प्रकट होती हैं जिससे त्रिलोक का सर्वोत्तम मंगल गंगाजी यानी जलमयी पार्वती ही ॥१९॥

कविता प्रतिमापरं पुरारेर्-
भसितोद्धूलनमस्ति यत्र मृत्युः ।
अमृतत्वमिवेयिवान् परां तां
परशृङ्गाररसेन संभुनक्ति ॥२०॥

शिवललाटिकाभस्म मृत्युरमृतञ्चेति द्वितयस्यापि संमिश्रः ।

कविता त्रिपुरारि का भस्म-लेप है जिसमें मृत्यु अमृतत्व से जुड़ता और करता रहता है रक्षा शृंगाररस के द्वारा परा की ॥२०॥

कविता द्वयताऽभिधे जगत्याः
स्तनयुग्मे हरिचन्दनस्य लेपः ।
मुखरा रशना नितम्बचक्रे
स्मरपत्न्या यदिवा ऽभियोक्तृशक्रे ॥२१॥

नितम्बचक्रस्याभियोक्तृत्वे विपरीता रतिरुन्नेया ।

जगती एक नायिका है। उसमें द्वैत के दो कुच हैं। कविता है उन पर शोभित हरिचन्दनालेप। अथवा काम की पत्नी रति द्वारा किए जा रहे अभियोग में सर्वाधिक सक्रिय जो नितम्ब-चक्र, उस पर मुखरित रशना है कविता ॥२१॥

कविता रतिमन्दिरे प्रकाशो
मणिदीपः परिकीर्णचूर्णमुष्टिः ।
कविता चपलः प्रियस्य पाणि-
र्वसनग्रन्थिविमोचने प्रसक्तः ॥२२॥

मेघदूते 'नीवीबन्धो०' इति ६७ पद्यम् ।

रतिगृह में प्रकाशित और चूर्णमुष्टि को विफल कर देने वाला मणिदीप है कविता। अथवा कविता उसी समय का वह प्रियपाणि है जो प्रसक्त रहता है वसनग्रन्थि के विमोचन में ॥२२॥

कविता प्रथमा प्रभातकान्तिः
प्रथिमानं दधती प्रतिक्षणं या ।
तनुते सचराचरे प्रपञ्चे
नयनोन्मीलन-शक्तिपातविद्याम् ॥२३॥

उषा की प्रथम दीप्ति है कविता, जो स्वयं फैलती और फैलाती जाती है इस चराचरी प्रपंच में शक्तिपात की नयनोन्मीलनकारी अद्भुत विद्या ॥२३॥

कविता मुरली त्रिलोकवन्द्या
शिशुगोपस्य परस्य गोकुलेषु ।
विहिताः शतशो यया गवां ते
स्नुतधाराः परिपीवरस्तनाग्राः ॥२४॥

गवामिन्द्रियाणामपि ।

परात्पर शिशु गोपाल की वह त्रिलोकवन्द्य मुरली है कविता, जिसने वहा दी थी दूध की धारा सैकड़ों गौओं के परिपीवर स्तनाग्रों से, गोकुलों में ॥२४॥ गो इन्द्रियाँ भी ।

कविता परिदुर्बले कपोले
विरहिण्याः खलु पाण्डिमाभियोगः ।
अलकान् परिधूसरानुपास्य
प्रतिसन्ध्यं प्रथिमानमश्नुते यः ।।२५॥

विरहिणी के परिदुर्बल कपोलों की गहरी पाण्डुता है कविता, जो परिधूसर अलकों से सटकर और धूसर होते जाते हैं हर सांझ ॥२५॥

कविता वलयानि यक्षपत्न्याः
परिशिञ्जन्ति विनीयतेतरां यैः ।
अहरत्यय-मत्त-चित्तधातुर्-
ललिते ताण्डविते शिखी सतालम् ॥२६॥

मेघदूते 'तन्मध्ये चे'—ति ७७ पद्यम् ।

यक्षपत्नी की खनकती हुई वे चूड़ियाँ हैं कविता, जो तालपूर्वक ललित ताण्डव की शिक्षा देती रहती हैं उस मयूर को, जिसका मन सांझ होते ही हो जाया करता है मत्त ॥२६॥

कविता　सुभगा-ललाटबिन्दुः
स्मितिरेखा सुभगस्य वाऽधरोष्ठे ।
कविता　प्रणयस्य　तद्गतस्य
मधुरा कापि लिपिः स्वरेण शुद्धा ॥२७॥

सुभगा के ललाट पर लगी टिकी भी कविता है और सुभग के आधरोष्ठ पर छाई स्मितिरेखा भी। साथ ही इन दोनों के प्रणय की जो स्वर शुद्ध लिपि है वह भी कविता ही है माधुर्य के कारण ॥२७॥

कविता सुभगं स्तनोत्तरीयं
कलहंसद्वय-लाञ्छनेन रम्यम् ।
यत आवृत आत्मजोऽभिजातः
स्तनकोषे मुखमादधाति मातुः ॥२८॥

कलहंस की जोड़ी से अलंकृत, अतः रम्य और सुभग वह ओढ़नी है कविता, जिससे ढँका सलोना आत्मज मां के आंचल में लगा रहा होता है अपना दुधमुंहा मुंह ॥२८॥

कविता　स्तनकुम्भबन्धुराङ्गे
विधृता शारदया हृदि स्वकीये ।
परमेश्वर-संस्तवे　नदीष्णा
स्वरसन्धानवती परा विपञ्ची ॥२९॥

स्वरसंधानयुक्त और परमेश्वर के संस्तव में चतुर एक परा विपंची है कविता, जिसे माता शारदा अपने स्तनकुंभ-बन्धुर वक्षःस्थल पर धारण किए रहती हैं ॥२९॥

कविता मुरलीसखस्य विष्णोः
करलग्नं नवनीतपिण्डयुग्मम् ।
भुवनत्रय-पालकोऽपि यस्मै
वरयामास विभुः स चौरलीलाम् ॥३०॥

मुरलीमनोहर विष्णु के हाथों में लगी नवनीतपिण्डों की वह जोड़ी है कविता, जिसके लिए तीनों भुवनों के पालन में समर्थ उस विभु ने भी रची चोरी की लीला ॥३०॥

कविता मधुसंभृतं महाहं
रतिजानेर्ननु षष्ठमस्त्ररत्नम् ।
कवितैव वचोधिदेवतायाः
करकञ्जेन धृतः शुकस्य डिम्भः ॥३१॥

कविता तो रतिपति काम का संख्या में छठा और मधुसंभृत महास्त्र है। कविता ही है वाग्देवी के करकमलों में विराजमान शुकशावक ॥३१॥

कवितोच्छ्वसितं त्रयीपुरन्ध्र्याः
कविता स्वस्तिवचो मनुष्यजातेः ।
कविता परमो विभूतियोगो
विरजस्कस्य परात्परस्य पुंसः ॥३२॥

वेदत्रयी सौभाग्यवती गृहिणी है और कविता है उसका उच्छ्वास। कविता है मनुष्यजाति का स्वस्तिवचन और कविता ही है रजोरिक्त परात्पर का परम वैभव ॥३२॥

कविता नलिनीदले नखाग्रै
रचितो मुग्धशकुन्तलाऽभिलेखः ।
कवितैव निषादराजपात्रं
प्रभुपादोदकपूर - पूरितं यत् ॥३३॥

शाकुन्तलस्य तृतीयेऽङ्के 'तुज्झ णे'—ति गाथा ।
निषादराजवृत्तान्तस्तुलसीकाव्ये प्रसिद्धः ।

कविता है भोलीभाली शकुन्तला का वह प्रेमपत्र, जिसे उसने नलिनीदल पर नखाग्र से लिखा था । उधर वह जो निषादराज की प्रभुपादोदक से पूर्ण कठौती है वह भी कविता ही है ॥३३॥

कविता निशि चक्रवाकयुग्म-
युगचञ्चू-विधृतो मृणालतन्तुः ।
निभृतं नु विधातृदृष्टिपाता-
दभिसारं हृदये यतः श्रयेते ॥३४॥

देखो, देखो, रात को बिछुड़े इन चक्रवाकदम्पती ने जिस मृणाल को अपनी-अपनी चोंच में एक-एक छोर पर पकड़ रखा है वह है कविता । उसी सुरंग से इन दोनों के प्रीतिस्निग्ध हृदय छिप-छिप कर मिल लिया करते हैं यह सोचकर कि कहीं वाम विधाता उन्हें लख न ले ॥३४॥

कविता जनकात्मजाङ्घ्रिमुक्तं
नभसो नूपुरमेकमद्वितीयम् ।
अपरेण हृदा नु राघवस्य
रुदितं येन चिराय मौनभाजा ॥३५॥

रावणद्वारा हरी जा रही सीता का उनके चरण से छूटकर आकाश से टपका वह एक और अद्वितीय नूपुर है कविता, वस्तुतः जो राम का दूसरा हृदय है और मौन है तब भी करता जा रहा है करुण क्रन्दन ॥३५॥ रघुवंश १३. २३ 'सैषा स्थली' पद्य ।

कविता ननु रोहसेनमातुस्-
त्रसरः कश्चन सर्वसिन्धुसारः ।
गणिकादुहितुः सुवर्णभूषा
कविता मृच्छकटे स्वतो विकीर्णा ॥३६॥

[मृच्छकटिक के] बालक रोहसेन की माता धूता की सर्वसमुद्रसारभूत एकावली है कविता। उधर गणिकापुत्री वसन्तसेना का सुवर्णालंकार भी कविता ही है, जो जा बिखरा था उस बालक की मिट्टी की गाड़ी में स्वयम् ॥३६॥ द्र० मृच्छकटिक ।

कवितैव जवाहरस्य वक्षः-
पटवासाऽरुण-पाटल-प्रसूनम् ।
कविता निजहस्तसिद्धसूत्रा
सितखादी ननु गान्धिनः शरीरे ॥३७॥

खादीति देशभाषापदम् ।

कविता ही थी जवाहरलाल नेहरू की सफेद अचकन पर लगी गुलाब की लाल कली। कविता ही थी महात्मा गांधी के शरीर पर सुशोभित उनके अपने हाथों काती गई सफेद खादी ॥३७॥

कविता करपात्रभिक्षुकस्य
श्रुतिशास्त्रव्रतपालने स्थिरा धीः ।
कविता विरतिर् यशोधराया
दयितस्यार्य्यमतेः पलायितस्य ॥३८॥

यह जो स्वामी करपात्री जी की वेदशास्त्रों के आचार पथ के पालन में दृढ़ और स्थिर बुद्धि है यह है कविता। और वह जो यशोधरा के आर्यमति प्रिय की विरति है, जिससे वह आर्यपथ से भाग खड़ा हुआ था, वह भी कविता ही है ॥३८॥

कविता खलु तासकन्दवार्त्ता
कविता भारतरूसपाकमैत्री ।
कवितैव दधीचिकीर्ति-गाथा
ग्रथिता लालबहादुरेण भूयः ॥३९॥

तासकन्द-नाम्नि रूसनगरे संपन्नः सन्धिः ।

कविता है तासकन्दवार्ता, कविता है भारत, रूस और पाकिस्तान की आपस में मैत्री और कविता ही है लालबहादुरशास्त्री द्वारा महर्षि दधीचि के आत्मबलिदान की वहीं नए सिरे से लिखित गाथा ॥३९॥

कविता प्रियदर्शिनीन्दिराया
प्रतिमा कापि चिताग्निसंपरीता ।
कवितैव च राष्ट्रपालकानां
निखिलानां प्रति तां द्रुताः प्रणामाः ॥४०॥

प्रियदर्शिनी इन्दिरा की चिताग्नि में लिपटी काया थी कविता, और कविता ही थी विश्व भर के राष्ट्राध्यक्षों द्वारा उसे दी गईं भावपूर्ण प्रणामाञ्जलियाँ ॥४०॥

कविता भरतस्य भूतधात्र्यां
प्रभुशक्त्या युवकस्वयंवरोऽद्धा ।
कविता जनरोषमूर्च्छितानां
स्थविराणामपि संसदप्रवेशः ॥४१॥

कविता ही है भारतभूमि पर प्रभुशक्ति के द्वारा युवकों का स्वयंवर और कविता ही है जनरोषमूर्छित बूढ़ों का संसद् में अप्रवेश ॥४१॥ १९८५ के आमचुनाव के बाद ॥

कविता कलपुत्रिका परेषां
निजराष्ट्राय समर्पितान्तरात्मा ।
अशकन् सुषमां न वै यदीयां
पुरुषाणामपि लङ्घितुं शतानि ॥४२॥

विदेशियों की अनिन्द्यसुन्दरी क्लोपेट्रा है कविता, जो सर्वात्मना अर्पित है अपने राष्ट्र को और सैकड़ों पुरुष भी छू नहीं पाए जिसकी सुषमा को ॥४२॥ कलपुत्रिका = Cleopatra.

कविता नयनं शिवे तृतीयं
कविता वक्षसि कौस्तुभो मुरारेः ।
कविता परितोऽभिसंचरिष्णौ
पवमाने मधुसौरभस्य योगः ॥४३॥

कविता है शिव की तीसरी आँख । कविता है मुररिपु विष्णु के वक्ष पर विराजमान कौस्तुभ । कविता ही है चतुर्दिक् संचारशील पवन में मधुसौरभ ॥४३॥

कविता न परस्य शोषणाभिर्-
निजकुक्षेः परितर्पणेन तोषः ।
नलिनी जलसंभृते तटाके
जनिमाप्नोति न पावकस्य कुण्डे ॥४४॥

दूसरों का शोषण कर साधा गया अपनी कूंख का तर्पण कविता नहीं। कमलिनी जलपूर्ण सरोवर में ही जम पाती है, अग्नि के कुंड में नहीं ॥४४॥

कविता परिपूर्णशर्व्वरीश-
ग्रसनोल्लासकटुर्न राहुदंष्ट्रा ।
निजसन्ततिभक्षणाऽनुरक्ता
न हि मातृष्वभिगण्यते भुजङ्गी ॥४५॥

परिपूर्ण शर्वरीपति (चन्द्र) को ग्रस लेने के उल्लास से कटु राहुर्दष्ट्रा नहीं है कविता। अपनी ही सन्तति को चबा डालने में निरत सर्पिणी माताओं में कभी नहीं गिनी जाती ॥४५॥

कविता जमदग्निकामधेनुर्-
न पुनः कापि सहस्रबाहुगर्धा ।
कविताऽस्थिचयो दधीचिदत्तो
न पुनर्यः किल दुन्दुभिप्रक्लृप्तः ॥४६॥

महर्षि जमदग्नि की कामधेनु है कविता, न कि सहस्रबाहु की क्रूर लिप्सा। कविता है महर्षि दधीचि के द्वारा प्रदत्त अस्थिचय, न कि वह जिसे बनाया था दुन्दुभिनामक दानव ने महर्षियों की अस्थियों से ॥४६॥

कविता जनकात्मजा नमस्या
न दशग्रीव-भुजाटवी न लङ्का ।
सुहृदः कविता स कोऽपि वह्निः
शिशिरोऽजायत यो विदेहपुत्र्यै ॥४७॥

कविता है महाराज जनक की प्रणम्य पुत्री सीता, न तो रावण की भुजाटवी और न उसकी लंका। सज्जनो, मित्रो, भाइयो, देखो देखो कविता है वह आग, जो ठंढी पड़ती गई इसी सीता के लिए ॥४७॥

प्रथमस्य स वै कवेः कुटीरः
कविता यत्र सुतावसूत सीता ।
अथ सा कवितैव लोकहेतोर्-
यदसौ गर्भवतीसती-निरासः ॥४८॥

आदिकवि की वह कुटिया है कविता, जिसमें जन्म दिया था दोनों पुत्रों को सीता ने। और, लोकाराधन के लिए गर्भवती सती का जो परित्याग है वह भी कविता ही है ॥४८॥

कविता ह्यनुयोगिता समाजे
यदवच्छेदकतां व्रजेत् स्वधर्मः ।
प्रतियोगितया परापतन्तो
यदि न स्युः परधर्मभीरुभावाः ॥४९॥

कविता है समाज की स्वधर्मनिष्ठा, यदि अन्य सब परधर्मभीरु हों और वे उस पर प्रतियोगी बनकर न टूटें ॥४९॥ स्वधर्मनिष्ठप्रतियोगिता-निरूपिता स्वधर्मावच्छिन्ना समाजनिष्ठानुयोगिता कविता ॥

कविता न घृते वसां विमिश्रच
सुरभीणां द्रविणाय राष्ट्रघातः ।
कविता न धनाय शत्रुहस्ते
निजराष्ट्रात् स्वरहस्यकूटपातः ॥५०॥

इमा घटनाः प्रसिद्धाः ।

घृत में गाय की चर्वी मिलाकर राष्ट्र के साथ किया गया घात कविता नहीं है। इसी प्रकार धनलिप्सा में अपने राष्ट्र से अपने रहस्यों का शत्रुके हाथ में डाला जाना भी कविता नहीं ॥५०॥

कविता न समुद्रपारदेश-
स्थित-बन्धुब्रुव-बुद्धिभेद-भक्तिः ।
कविता न भविष्यकुक्षिपूर्त्यै
प्रथमानेऽद्यतने मुधा विरक्तिः ॥५१॥

सिक्खानां कश्चन लन्दने स्थितो बन्धुर्विषं वमति ।

समुद्रपार किसी कोने में छिपे तथाकथित झूठे बन्धुके द्वारा उत्पन्न बुद्धिभेदभक्ति कविता नहीं । न तो कूँख भरने के लिए आजकी अकारण की गई उपेक्षा ही है कविता ॥५१॥

कविता न कवित्व-शक्ति-लाभात्
परितः स्वैरतयेट्चरत्व - वृत्तिः ।
कविता न हि पत्रकारतायां
प्रथितायां बत दस्युताप्रवृत्तिः ॥५२॥

इट्चरः स्वेच्छाचारी वृषः ।

कवित्वशक्ति प्राप्त हो तो छुट्टे साँड-सा हर कहीं मुँह मारते फिरना अर्थात् कवियों की उच्छृंखलता नहीं हुआ करती कविता । चल पड़ने पर पत्रकारिता की डकैती में परिणति भी कविता नहीं ॥५२॥

कविता न लघीयसे महीयान्
जनतायां निजकर्म्मणे प्रचारः ।
कविता परकीयताऽभिमाना-
न्मधुवल्ल्यां न हि गर्दभाभिसारः ॥५३॥

करतूत थोड़ी, पर, जनता में प्रचार बहुत बड़ा कविता नहीं । पराई है इसलिए दाख की वेल को चर जानें हेतु गदहों का ठेला जाना भी कविता नहीं ॥५३॥

कविता तपसां तपोधनानां
परिपाकः खलु कोऽपि मङ्गलात्मा ।
मुखरीकृत - भूत - सामरस्यं
कबिता स्वस्त्ययनं चराचरस्य ॥५४॥

कविता है तपस्वियों के नानाप्रकार के तपों का मांगलिक परिपाक। कविता है सर्वभूतसामरस्य के स्वर में चराचरात्मक विश्व का स्वस्त्ययन ॥५४॥

कविता भगतस्य पाशपीठे
स्मितिरेखा दृढनिश्चयस्य साध्वी ।
कविता न पलायनस्य मन्त्रः
कवितोत्साहभृतां स्वपाणिवादः ॥५५॥

पाणिवादो महाभारते प्रसिद्धः ।

दृढ़निश्चयी सरदार भगतसिंह का फांसी के तख्त पर खड़े होकर सहजभाव से मुसकुराना है कविता। कविता पलायन का मन्त्र नहीं। कविता है उत्साही पौरुष का स्वपाणिवाद या कारसेवा ॥५५॥

कविता न मुमूर्षुता गुरूणां
पदलाभेन कृतार्थभावभाजाम् ।
कविता न च राजनीतियात्रा
गुरुगेहेऽध्ययनाय दीक्षितानाम् ॥५६॥

गुरूणामध्यापकानाम् ।

गुरुजनों की मुमूर्षुता कविता नहीं, यह सोचकर कि पद मिल गया और हम कृतकृत्य हो चुके। उधर गुरुकुल में अध्ययन के लिए दीक्षित विद्यार्थी की राजनीतियात्रा भी कविता नहीं ॥५६॥

कविता न हि जीविका कवीनां
कवितोल्लासमयं स्वदानसत्रम् ।
कविता न वणिग्वधूर्वराकी
द्रविणाय श्रितचित्रवस्तुसार्था ॥५७॥

कविता कवियों की रोजी नहीं होती । कविता हुआ करती है उनका आत्मदानी सत्र, वह भी उल्लास से परिपूर्ण । कविता बेचारी पंसारिन नहीं, जो कमाई के लिए सब कुछ बटोरनी और सजाया करती है अपनी दूकान ॥५७॥

कविता न बुभुक्षितस्य पेया
न बलीवर्द्दकुले कडङ्गरं सा ।
कविता परितृप्तिमागतानां
मुखपद्मे निभृता नु नागवल्ली ॥५८॥

कडङ्गरं बुसम्, भूसापदवाच्यम् ।

कविता क्रूर बुभुक्षा में गट्ट गट्ट निगली जा रही पेया नहीं हुआ करती । नतो हुआ करती वह भूखे बैलों के सामने डाला गया भुस । कविता तो परितृप्ति को प्राप्त शिष्टजनों के मुखकमल में छिपी और चूसी जा रही ताम्बूल-वीटिका है ॥५८॥

कविता यदि चेद् विवाहितानां
ललिता कौतुकवेश्मरङ्गगीतिः ।
कवितैव तदा चमूपतीनां
रणभूमावधिघोषणा-मतल्ली ॥५९॥

कौतुकवेश्म कौतुकागारं कोहवरेति देशभाषापदवाच्यम् ।

कविता यदि विवाहितों के कोहवर की गीति है, तो युद्धभूमि में सेनापतियों द्वारा की जा रही उद्घोषणाएँ भी कविता ही हैं ॥५९॥

कविता द्रुपदात्मजोत्तमाङ्गे
गतपाशो ननु कोऽपि केशहस्तः ।
कविता कुटलात्मजस्य शीर्षे
परिकीर्णा ननु सा शिखाभुजङ्गी ॥६०॥

कुटलात्मजः चाणक्यः ।

देखिए देखिए, यह जो खुला-बिखरा पांचाली का केशपाश है यह है कविता । उधर चाणक्य के सिरपर खुली और फुफकार रही जो शिखासर्पिणी है, जो खूब प्रसिद्ध है, वह है कविता ॥६०॥

कविता धृतमुण्डमालिकाया
द्रुतकाल्याः करपल्लवे कृपाणः ।
कविता यदिवा तदास्यरन्ध्रे
विलसन्ती रसनानटी प्रचण्डा ॥६१॥

द्रुता चासौ काली द्रुतकाली । दुर्गासप्तशती-७ ।

देखिए, मुण्डमालाधारिणी और चारों ओर लपक रही इस रणचण्डी के सुकोमल हाथ में रखा जो [नेत्रयुक्त विकराल] कृपाण है यह है कविता । या देखिए, यह जो उसी के मुख-विवर में लपलपा रही प्रचण्ड जीभ है यह है कविता ॥६१॥

कविता यदि भीष्मगा प्रतिज्ञा
ननु भीमेन कृतापि सैव सेयम् ।
कविता न युधिष्ठिरस्य नीतिर्-
धृतराष्ट्रस्य विपर्य्ययः स कश्चित् ॥६२॥

भीष्म की प्रतिज्ञा तो कविता है ही, परन्तु भीम की प्रतिज्ञा भी कविता ही है । परन्तु हां, धर्मराज युधिष्ठिर की नीति कविता नहीं । वह तो एक प्रकार से धृतराष्ट्र का उलटाव है ॥६२॥

विहितप्रतिषिद्ध-शास्त्र-वाक्ये
प्रतिषेधस्य विधेश्च वीक्षणा या ।
ननु सा कविरेव कालसर्प–
प्रतिसर्पेक्षण-जागरूकदृष्टेः ॥६३॥

विहिते निषेधस्य, निषिद्धे च विधेर्वीक्षणैषा गीतायां ४.१८ ।

विधि में निषेध और निषेध में विधि का जो अपवादी दर्शन उसकी परख है कविता । और, सच पूछिए तो वही है कविता । उसी में रहती है वह जागरूकता जो कालरूपी काला सर्प दंशकरके जब विषवमन के लिए उलटने को होता है तो उससे बचा लिया करती है ॥६३॥

कविता शिवराज-पाणिदण्डे
प्रतिपन्थिक्षपणा शिवा भवानी ।
कविता भुजशालिनि प्रतापे
पुररंहाः खलु चेतकोऽतिमानी ॥६४॥

शिवाजी महाराज के हाथ में रखी शत्रुसंहारकारिणी शिवाभवानी तलवार है कविता । भुजशाली महाराणा प्रताप के साथ जो ओजस्वी और महाजव चेतक है वह है कविता ॥६४॥ शिवाभवानी = शिवाजीखड्गः ।

अथवा, चितिदुर्ग-जौहराग्नि-
ज्वलितज्वालचये महासतीभिः ।
लिखिता खलु या लिपिः स्वहोमैः
कविता तत्र परिक्रमां तनोति ॥६५॥

चितिदुर्गं = चित्तौड़-दुर्गम् । जौहर इति देशी शब्दः । अग्नौ देह-विसर्गस्तदर्थः । पद्मिनी चित्तौड़स्य राज्ञी । तामअलाउद्दीनश्चकमे, रुरोध च महत्या सेनया चित्तौडम् । विजित्य यदा चित्तौडदुर्गं प्रविशति पश्यति सः सखीभिः सहिता पद्मिनी ज्वलन्तमग्निं प्रविश्य भस्ममात्रगात्री तिष्ठतीति ।

याद कीजिए चित्तौड़-गढ़ की उस कालजयी लिपि को, जो बनी है महान् सतियों की जौहर की ज्वाला में कूद-कूद कर दी गई आत्माहुति से । मित्रो ! वहाँ किया करती है परिक्रमा कविता ॥६५॥

कविता भरतस्य राजलक्ष्म्या
सह पत्नीं जननीं च संविहाय ।
प्रतिरोपित - राम - पादुकस्य
निटिले कोऽप्यसितो जटाकलापः ॥६६॥

रामानुज भरत ने नन्दिग्राम में रामपादुकाओं के सामने जो अपने सिर पर काली-काली जटाएँ बढ़ा रखी हैं वे हैं कविता। इनके भीतर निहित है कहानी तीन तीन त्यागों की। एक त्याग राजलक्ष्मी का, एक त्याग माता का और एक पत्नी का ॥६६॥

द्रष्टव्य सीताचरितम् १·२२ पद्य ॥

कविता न पुरस्क्रियावसूना–
मुपलेपेन मृदङ्गगर्जितानि ।
कविता न परोपजापदग्धा–
क्षरबन्धाहत-शारदा-रुतानि ॥६७॥

पुरस्काररशि के लेप से मृदंग के खोखले उदर से उगली जा रही गर्जना कविता नहीं। और न तो परनिन्दा के दग्धाक्षरों से झुलसी मां शारदा का करुण चीत्कार ही है कविता ॥६७॥

कविता ननु विश्वनाथगात्रे
भुजगानां परिमर्द्दना-सपर्य्या ।
विषपानमहाव्रते रतानां
जगतीमङ्गलसक्षणे क्व भीतिः ॥६८॥

देखिए, यहाँ काशी में बाबा विश्वनाथ के शरीर को जो महाविषधर सांप मसल रहे हैं यह है कविता। जो होते हैं विश्वमंगल से उत्सवी विषपानमहाव्रत में निरत उन महापुरुषों को भय कहाँ ॥६८॥

कविता न हि मद्यपानगोष्ठी
कविता वा नहि पीतपत्रमैत्री ।
कविता न हि कापि बुद्धखर्जा
तिलतालीकरणेऽद्वितीयगर्ज्जा ॥६९॥

पीतपत्रं नाम निन्दापरायणं कौलीनमात्रप्रकाशकं समाचारपत्रम् । तिलस्य तालत्वमतिरेकातिशयः ।

मजकचियों की गोठ नहीं हुआ करती कविता, न तो हुआ करती वह पीत-पत्रकारिता, जिनका पौरुष कुल मिलाकर केवल एक बात में है, तिल को ताड़ बनाने में ॥६९॥

कविता न हि सेतुबन्धमात्रं
कविता संतरणव्रतं महाब्धेः ।
अथ सा कवितैव सिन्धुपारे
दशकण्ठो यदि तस्य दर्प्पशातः ॥७०॥

केवल पुल बांधलेना मात्र कविता नहीं। कविता महासमुद्र के संतरण का महान् व्रत भी है। और, उसके आगे वह भी कविता ही है कि उस पार यदि दशकंधर मिल जाए तो कर डालना उसके दर्प का शमन ॥७०॥

कविता न हि मेघदूतमात्रं
कविता सैनिकहेतयोऽपि युद्धे ।
चरमेण निराकृतेऽरिगोत्रे
प्रथमस्य प्रसरोऽभिलक्ष्यते यत् ॥७१॥

चरमेण हेतिभिः, सामान्ये नपुंसकम्, प्रथमं काव्यम् ।

कविता केवल मेघदूत नहीं है। युद्धभूमि में सैनिकों के हथियार भी है कविता। कविता को प्रसार मिलता ही तब है जब हथियार आक्रमणकारी शत्रुदल को खदेड़ दिया करता है ॥७१॥

कविता न हि हंसमात्रचञ्चूः
पयसोर्या खलु भेदने नदीष्णा ।
कविता ननु सा मयूरचञ्चू-
रपि काकोदरचूर्णने पटुर्या ॥७२॥

कविता केवल हंस की चोंच नहीं जो जाना करती है दूध को पानी से अलग कर लेना। मयूर की वह चोंच भी कविता है जो जानती और ठीक से जानती है कि हलाहलधारी साँपों को कैसे चूर्णविचूर्ण किया जाए ॥७२॥

कविता निजराष्ट्रपालनस्य
गुरुगोविन्दसुतद्वयस्य चैत्यम् ।
कविता गुरुनानकस्य वाणी
श्रुतिसर्वस्वमयं हि यत्र शैत्यम् ॥७३॥

सिक्खगुरोर्गोविन्दसिंहस्य शिशू सुतौ जीवितावेव भित्तौ चितौ, किन्तु ताभ्यां यवनधर्मो न स्वीकृत इति ह स्मेतिह्यविदो विदुः। गुरुनानकदेवोऽपि सिक्खानां गुरुः।

कविता देखनी हो तो जाइए वहां जहां गुरु गोविन्दसिंह जी के दो दो नन्हें मुन्नों को चुन दिया गया है दीवाल में। भाइयो! कविता है गुरु नानकदेव जी की बानी, जिसमें एक अद्भुत शीतलता है, वह शीतलता जो है सभी वेदों का सारसर्वस्व ॥७३॥

कविता प्रविरोपणं व्रणानां
कविता न व्रणजन्मदानदीक्षा ।
कवयः ! कविता द्विजिह्वता नो
शवयात्रा ननु सा मनुष्यजातेः ॥७४॥

घाव करना नहीं, घाव को भरना है कविता। कविबन्धुओ! सुन लो। देखो द्विजिह्वता कविता नहीं हुआ करती। मानवता की शवयात्रा है वह। उसको कविता नहीं कहा जा सकता ॥७४॥

कविता न हलाहलस्य लब्ध्यै
कृतिनां क्षीरसमुद्रमन्थनानि ।
कविता तु हलाहलस्य गर्भा-
दपि पीयूषरसस्य कर्षणानि ॥७५॥

परमाणुयुगे परमाणुशक्तिरदभुतोपलब्धिः । सेयं शिवैव परा ।

अरे चतुरो, यह कविता नहीं कि किया जाए क्षीरसागर का मन्थन और निकाला जाए उससे हालाहल । कविता तो वह कि निकाला जाए अमृत हालाहल के भी गर्भ से ॥७५॥

कविता परमाणु - रक्तबीजे
शिवदूती, विघसव्रते नृसिंहे ।
कवितैव च शालुपक्षिराजः
कविता विश्वमहौषधं प्रसिद्धम् ॥७६॥

दुर्गासप्तशत्यां ९-१० अध्यायौ । शालुनृसिंहस्य निग्रहीता सपक्षोऽष्टापदो मृगस्तन्त्रेषु प्रतीतः ।

और, अरे परमाणु, यदि तू रक्तबीज दैत्य है तो सुन, तेरे लिए शिवदूती है मेरी कविता । वह तेरा उर्वर रक्त पी जाएगी और कर देगी तुझे निश्शेष । इतना ही नहीं । यदि नृसिंह का क्रोध शान्त न होगा और वह चराचर को भक्षण करने में लग जाएगा तो उसे पंजे में दबाकर उड़ जाने वाले पक्षिराज शालु का काम भी मेरी कविता ही करेगी ॥७६॥

कविता हनुमत्तनुर् विशाला
प्रविभीषा-सुरसाऽऽस्य-शान्तिसिद्धौ ।
अणिमा महिमेव यत्र कश्चित्
कुशलः कृत्यविधौ सदाऽनुरक्तः ॥७७॥

प्रबिभीषा प्रकृष्टा विभीषा विश्वनाशभयम् । सुन्दरकाण्डे सर्ग-१ ।

यह जो महाभयावह विभीषा है यह यदि सुरसा का विकराल वदन है तो उसे विफल करने में चतुर हनुमान् जी की काया है मेरी कविता । वह काया जिसकी अणिमा पर निछावर जाया करती है महिमा, यानी कार्यसिद्धि का रामबाण ॥७७॥

कविता गलदश्रुधारमन्तः-
करणं कर्म्मरतिश्च निर्विरामा ।
भुवनत्रितयेऽपि यत्प्रतीकस्-
त्रिषु कालेषु महामनाः स रामः ॥७८॥

एक ओर अश्रुधार से भीगा अन्तःकरण और दूसरी ओर कर्तव्य के प्रति निर्विराम निष्ठा। यह है कविता। तीनों लोकों और तीनों कालों के लिए इसी के प्रतीक हैं रामायण के महामना श्रीराम ॥७८॥

विषम-क्षण-कालियाऽहिराजे
कविता निश्चयकृष्णपादपातः ।
अ-विकल्प - विकम्पता - प्रपूर्णे
कविता कापि रतिर्मनःसमाधौ ॥७९॥

कालियो नाम यमुनाह्रदवासी विषसर्पः।

विषम क्षण के कालिय नाग पर कविता ही बना करती है श्रीकृष्ण का निश्चयरूपी पादपात। विकल्प और विकम्प से ऊपर की मनः-समाधि है कविता ॥७९॥ द्रष्टव्य गीता का अविकम्पयोग (१०.७)॥

कविताऽऽत्मविवेकसाहसिक्य-
चरणद्वन्द्वधृता नृलोकयात्रा ।
कविता परिभोग आत्मतृप्तेः
कविता मुक्तिमयी स्वभुक्तिलीला ॥८०॥

आत्मविवेक और साहस। मानव की इन दो चरणों पर होती जा रही लोकयात्रा है कविता। कविता आत्मतृप्ति का परिभोग है। कविता है आत्म-भुक्ति की मुक्तिमयी लीला।।८०॥

कविता निजता विभोः ससीमे
कविता तस्य विभौ विरक्तताऽपि ।
कवितैव गुणत्रयी समेता
समवायेन परस्परं जडापि ॥८१॥

विभुत्वं व्यापित्वम्, सीमा तद्विपरीता । तस्य ससीमस्य ।

ससीम पर असीम की निजता है कविता। किन्तु असीम पर ससीम की विरक्ति भी कविता ही है। त्रिगुणी भी कविता ही है जो जड़ होते हुए भी सदा जुड़ी ही रहती है, बिखरती नहीं ॥८१॥

प्रबलं कवितुः समाधियोगं
सरसे भावमयेऽत्र वस्तुसंघे ।
कवितेति विभावयन्ति सन्तः
स्रुतिमाप्तेन हृदैव भाव्यमानम् ॥८२॥

तदिदमुक्तं प्रथमेन पद्येन ।

इस सरस और भावमय वस्तुसंघ में जो कवि का प्रबल समाधियोग, सन्त जन कह दिया करते हैं उसे ही कविता। उसे केवल द्रवित हृदय से ही चखा जा सकता है ॥८२॥

कविता विभुता हृदः कृशस्य
कृशता वा विभुनोऽस्य पारवश्यात् ।
कृशता - विभुता - त्रिवेणिकायां
कविता काचन दिव्य-हेमहंसी ॥८३॥

कृश हृदय की विभुता या विभु हृदय की कृशता है कविता। इन दोनों की जोड़ी जिस तीसरी धारा को जन्म देती और बन जाती हैं त्रिवेणी उसमें विचरण करती जो एक दिव्य हेमहंसी वही है कविता ॥८३॥

कविता वटपादपोऽक्षयाख्यः
कविता कन्दरगा स्वयंप्रभा च ।
कविता नरवानरेषु मैत्री
कविता रामकथैव भारतीया ॥८४॥

स्वयंप्रभा रामायणे प्रसिद्धा कन्दरवासिनी प्रतिभारूपा तापसी ।

कविता है अक्षय वट । कविता रामायण की स्वयंप्रभा है । कविता ही है नरों के साथ वानरों की मैत्री । अथवा पूरी रामकथा ही है भारतीय कविता ॥८४॥

कविता क्रियमाणकर्म्मकोषः
कविता संचितनाशनः प्रबोधः ।
कविता चितिभित्तिचित्रकृत्ये
विविधारब्ध-विकर्म-कर्म-भोगः ॥८५॥

श्रीमद्भगवद्गीता ४.१७-१८ ।

कविता एक ओर तो क्रियमाण कर्मों का कोष है और दूसरी ओर संचितकर्मनाशक प्रबोध भी । चिति की भित्ति पर जो अनेक रंगों का चित्रकर्म फैला हुआ है उसमें विचित्रवर्णी विकर्म और कर्म का जो परिभोग, बस बस, वही है कविता ॥८५॥

कविता शिशुशङ्करस्य पाणौ
यतिदण्डः कृतभाष्यरत्नषण्डः ।
कवितैव गतेऽपि विश्वरागे
मठपीठे ललिताम्बिकाऽर्चनानि ॥८६॥

नन्हें से बालक शंकर के हाथ में रखा यति-दंड है कविता । उसी ने न किया है उत्तम भाष्यों का निर्माण ? और यह क्या कि संसार का राग तो छूट गया तब भी की गई शंकराचार्यपीठों की स्थापना और विधान किया गया उनमें ललिता त्रिपुरसुन्दरी मां की अर्चना का । सच पूछिए तो यह भी कविता ही है ॥८६॥

कवितोरसि शैलराजपुत्र्या
भवभूतिप्रतिकर्म्म, यत्र कामः ।
सुरतैर् गतगात्रसन्निकर्षैं
रतिचित्ते परितोषमादधाति ॥८७॥

शैलराज की बेटी के उरोजों पर श्मशानवासी शिव के वक्षःस्थल का जो वह भभूत दिखाई पड़ रही है, और देखो यह जो जलकर भस्म हो चुका काम है यह भी रति के साथ वहीं मिलन में निरत है और स्थूलशरीर के विना भी रति के चित्त में उत्पन्न करता आ रहा है परितृप्ति । अरे अरे, वह है कविता ॥८७॥

विधुरो रघुसूनुरश्रुनेत्रो
विधवा साश्रुदृगञ्चला रतिश्च ।
कविता त्वियमेव भारतीया
न तयोर्नष्टरथाश्वसंविदा यत् ॥८८॥

देखिए, यह है भारतीय कविता कि एक ओर रघु का बेटा अज इन्दुमती के न रहने से विधुर है और उसके नेत्रों से अविरल अश्रुधार बहती जा रही है । और दूसरी ओर काम की स्त्री रति भी कामदहन के बाद आँसू बहा रही है । किन्तु नष्टरथाश्वता नहीं है इनमें ॥८८॥

दो यात्रियों में से एक के पास केवल रथ था और एक के पास केवल घोड़े । दोनों आपस में मिल गए और आरम्भ हो गई उनकी लोकयात्रा । यही है नष्टाश्वरथन्याय ॥

कविता हृदयस्य भावबन्धो
निरुपाधिश्च निरन्तरश्च कश्चित् ।
नलिनीशशिनोः पराङ्मुखत्वे
व्यतिरेको ननु केन शोलितोऽत्र ॥८९॥

कविता तो हृदय का एक प्रकार का भावबन्ध है, जिसमें नहीं हुआ करती किसी भी प्रकार की कोई उपाधि—(सौदा सट्टा, स्वार्थ विनिमय) किसी भी प्रकार का अन्तराल और किसी भी प्रकार की खण्डितता । परस्पर में पराङ्मुख कमलिनी और चन्द्रके बीच अप्रतिकूलता क्या किसी को भी कभी भी दिखलाई दी ॥८९॥

कविताऽभिनवस्य कूर्चकेशो-
त्पलवन्याऽव्यभिचारिणी विपञ्ची ।
परमस्य शिवस्य शक्तिसक्तिर्-
निजरूपा कवितैव वामरीतिः ॥९०॥

अभिनवस्याभिनवगुप्तनाम्नः काश्मीरकस्याचार्यस्य । असक्तस्य सक्तिरेव वामा रीतिः ।

देखिए देखिए, यह जो अभिनवगुप्त की काली दाढ़ी के उत्पलवन से कभी नहीं हटने वाली विपंची है यह है कविता । परमशिव की शक्ति पर जो स्वस्वरूपा आसक्ति है वह भी वाममार्गी कविता ही है ॥९०॥

कविता यदि नास्ति योगिनीभूः
क्व नु दृश्येत परात्परो महात्मा ।
यदिवा चषकेऽस्य गोस्तनीनां
क्व नु दृश्येत रसोऽरुणप्रकाशः ॥९१॥

योषिद् शिवेति पुमाँश्च शिव इति भूमिकया मिलित्वा यं जातकं सुवाते तस्य योगिनीभूरिति परिभाषा शैवशास्त्रे प्रतीता । अभिनवगुप्तपादस्तादृश एव । तस्य द्राक्षासुरा तन्त्रालोकान्ते दृश्या ।

कविता यदि योगिनीभू न हो तो ऐसी परात्पर महान् आत्माएं कहाँ दिखलाई दें । साथ ही कहाँ दिखलाई दे इनके चषकों में ढला अरुण वर्ण का द्राक्षारस ॥९१॥

कविता - शतपत्र - चञ्चरीको
चितिरेषा क्षिपतीह यान् परागान् ।
प्रतिभान्ति त एव तत्र तत्र
बहुधा दर्शनमौक्तिकानि भूत्वा ॥९२॥

अहं ब्रह्मास्मीति, सोऽहमिति वाक्यानि न न कवितात्मकानि ।

कविता है शतपत्र । चिति है भ्रमरी । इसके पैरों से पराग के जो कण इधर-उधर बिखर जाते हैं वे ही दिखाई देने लगते हैं जहाँ-तहाँ सुहावने दर्शनों के रूप में ॥९२॥

विषयाः कवितैव सृष्टिकर्त्तुः
करण - प्रत्यवहार - हेतु - भूताः ।
अथवा कविताऽत्र तन्त्रविद्या
न विसिन्वन्ति कमत्र के स्वतो यत् ॥९३॥

प्रत्यवहारः प्रत्याहारः । विषयाः विसिन्वन्तो बध्नन्तो भावाः ।

बहिर्मुख इन्द्रियों को बटोर-बटोर कर जो भीतर लाते रहते हैं वे विषय भी विधाता की कविता ही हैं । या ऐसा समझिए कि कविता एक प्रकार की तन्त्रविद्या है जिसमें कौन किसको स्वयं नहीं बांधता ॥९३॥ द्रष्टव्य प्रथम पद्य ।

स्फटिकस्य शिलासु पीतरक्तैः
कुसुमैर्या किल शाम्भवी सपर्य्या ।
कविता यदि सा न, तर्हि नास्ति
जननी वै जननी पिता पिता वा ॥९४॥

सोऽयमतीव हृद्यः परभागः ।

लाल लाल पुष्पों से स्फटिक के भगवान् शिव की जो सपर्या है यदि वह कविता नहीं तो माता माता नहीं, और पिता पिता नहीं ॥९४॥

कविता हृदयस्य वाक्यशेषः
कथितेऽनुक्ततया प्रकाशमानः ।
कविता कथिता कथा पुराणी,
न पुराणी न नवा, सुराङ्गना सा ॥९५॥

अतएव व्यञ्जनामुपासते सहृदयाः ।

कविता है हृदय का वाक्यशेष, जो बचा रहता है अकथित, सब कुछ कह दिए जाने के बाद भी । कविता एक पुरानी कथा है सदा ही दोहराई जाती रहती है जो, पर न कभी पुरानी कहलाती और न नई ही । कविता एक सुरबाला है ॥९५॥

कविता नयनेषु दृष्टिसृष्टिः
कविता दृष्टिकुटीचरः प्रकाशः ।
कविता प्रतिभा प्रकाशकोषे
प्रतिभायां कविता विभातगीतिः ॥९६॥

कविता है नयनों में दृष्टि की सृष्टि, कविता है दृष्टि की कुटी में बिखरा प्रकाश, कविता है इस प्रकाशकोष में छिपी प्रतिभा और कविता है उस प्रतिभा में निहित प्रभातमंगल ॥९६॥

मनुजः कवितात्मनैव धाम्ना
मनुजत्वप्रतिपादने समर्थः ।
ऋगहो कवितैव संहितायां
प्रथमायां प्रथमा मनोः प्रसूतिः ॥९७॥

कविताभावकत्वमेव मनुष्यत्वरूपं मनुष्यस्य लक्षणम् ।

मनुष्य कवितारूपी प्रकाश से अपनी मनुष्यता प्रतिपादित कर पाता है। पहली संहिता में जो पहली ऋचा है वही तो है मनु की पहली सृष्टि ॥९७॥

अबला कविता कदापि नासो–
दबलो वा न कविः कदाप्यलक्षि ।
कवयस् ! त्यजताबलत्व-मिथ्या-
ग्रहवेतालमिमं प्रचेष्टमानम् ॥९८॥

कविता अबला कभी भी नहीं थी और न दिखाई दिया कवि भी कभी भी अबल । कवियो, छोड़ो अबलता के इस मिथ्याताण्डवी वेताल को॥९८॥

कविता नहि राजनीतिहट्टे
कलविज्ञापनपट्टिका वराकी ।
कविता न हि कूटनीतिवेश्या-
विट-वक्र-भ्रुकुटी-विवर्त्तनानि ॥९९॥

कविता राजनीति की हाट में लगी सुन्दर विज्ञापनपट्टिका नहीं। अरे अरे, कविता जो है सो, कूटनीतिरूपी वारवनिता के पीछे लपकते विटों की भौहों का जो बांकपना, वह नहीं हुआ करती ॥९९॥

कविता यदि कीर्त्तये धनाय
व्यवहाराय शरीर-शोधनाय ।
व्यवसायमिमं विभावयामो
व्यवसायः कविता कदापि नासीत् ॥१००॥

यदुक्तं मम्मटेन 'काव्यं यशसेऽर्थे'-त्यादि ।

कविता न तो कीर्ति के लिए रची जाती, न धन के लिए, न व्यवहार—(बोध) के लिए और न रोगमुक्ति के द्वारा शरीरशोधन के लिए। हमको लगता है यह सब व्यवसाय है और कविता कभी भी व्यवसाय तो नहीं थी ॥१००॥

द्रविणानि यशांसि संप्रतिष्ठाः,
अभिमानस्य हि केवलस्य भोज्यम् ।
यदिदं हृदयस्य भोज्यमेकं
कविता सा निजसत्स्वरूपनिष्ठा ॥१०१॥

निजे सति वास्तवे स्वरूपे निष्ठा यस्याः सा ।

धन, यश, प्रतिष्ठा हैं केवल अभिमान के भोज्य। जो भोज्य हृदय का है वह तो एकमात्र कविता ही है, यदि हो वह अपने सत्स्वरूप पर आधृत ॥१०१॥

कविता न जिजीविषा मुमूर्षा
कविता न क्षणभङ्गुरे निकाये ।
कविता गरलं गले निधाय
हिमशैले शिवया शिवस्य सुप्तिः ॥१०२॥

शिवयेति सहयोगे तृतीया ।

कविता न जिजीविषा है और न मुमूर्षा। इसलिए कि यह जो निकाय है यह क्षणभंगुर है। कविता तो गरल को गले में छिपाकर परम शिव की शिवा के साथ हिमशैल पर सुषुप्ति ठहरी ॥१०२॥

कविता हृदयस्य कापि वाणी
क्वथितस्य प्रणयेन चिन्मयेन ।
यदिवा हृदयस्थिता विपञ्ची
कविता स्वप्नकथाविमुक्तमौना ॥१०३॥

स्वप्नकथामुदीरयन्तीति वा पठनीयम् ।

कविता वीणा है हृदय की, जो क्वथित हो चिन्मय प्रणय से। कविता हृदय में छिपी वीणा है जो गूंज उठी हो स्वप्नकथा से ॥१०३॥

कविता प्रणयाग्निना द्रुतस्य
हृदयस्यास्य मधुक्षरा विपञ्ची ।
स्वत एव विवर्त्ततेऽर्थभावाद्
वचसां यत्र ऋतम्भरा प्रवृत्तिः ॥१०४॥

कविता मधुवर्षी विपंची है प्रणयद्रुत हृदय की। यहाँ वाणी विना किसी कारणकला के स्वयं ही अर्थ के रूप में विवर्त्तित होती रहती है, किन्तु बनी रहती है ऋतम्भरा ॥१०४॥ योगसूत्र १ ४७-५०

कविते ! यदि चेन्मनुष्यलोकात्
प्रतिगन्तुं कृतनिश्चया, नयस्व ।
निगमानपि सप्रकाशराशीन्
सदिनान् सोडुगणान् समं त्वयैव ॥१०५॥

कवितारानी, यदि मनुष्यलोक को छोड़कर लौटना ही है तुझे, तो लेती जा तेरे ही साथ इन निगमों को, इन दिनों को, इन नक्षत्रपिण्डों को, इन सभी प्रकारकी प्रकाशराशियों को ॥१०५॥

निगमागमसंज्ञकौ सुतौ द्वौ
प्रतिभापुंसवनी पुरः प्रसूय ।
प्रवयास्तपसा तु यां विलेभे
तनयां तां कवितेति भावयामः ॥१०६॥

निगम और आगम नामक दो पुत्रों को जन्म दे लेने के बाद प्रतिभारूपी पुंसवनी पुरन्ध्री ने काफी तप किया और काफी उमर बीत जाने पर जिस कन्या को जन्म दिया उसीको तो मानते हैं हम कविता ॥१०६॥

कवितेऽसि रुतिर्न वायसानां
त्वमहो शब्दमयी कदापि नासीः ।
त्वमयेऽनुभवो विनापि शब्दं
हृदयेनानुभवन्ति कामिनो यम् ॥१०७॥

कविते, तू कभी भी कौओं की काँव काँव न थी। तू तो शब्दमयी थी ही नहीं। तू तो ठहरी अनुभव। इसका प्रत्यक्ष करता है कामी विश्व, किन्तु इसमें शब्द की आवश्यकता नहीं भी पड़ा करती ॥१०७॥

न शुकः कविता, न पञ्जरोऽस्य
प्रतिशब्दोऽपि तयोर्न काव्यबन्धः ।
हहहा ननु विस्मृता भिदाऽद्य
पशवो धिक् पुरुषान् प्रशिक्षयन्ते ॥१०८॥

कविता न शुक है, न उसका पिंजरा और न उन दोनों की प्रतिध्वनि । हन्त, आज भुला दिया गया भेद और प्रशिक्षित करने लगे पशु पुरुषों को ॥१०८॥

कविता न हि राजनीतिभाषा
छलनाऽऽसीत् कविता कदापि नैव ।
तदिदं द्वितयं विमिश्रितं यत्
कवितायामिति दूयते चितिर्नः ॥१०९॥

कविता कभी भी राजनीति की भाषा नहीं थी, क्योंकि कविता कभी भी छलना नहीं थी । और आज, दोनों ही मिल बैठे हैं कविता में । इसी से व्यथित है हमारी चेतना ॥१०९॥

कविताऽस्ति कलाऽऽत्मसीमितात्मा
कविता नाभिनयो न गीतिबन्धः ।
कवयो भ्रममुत्सृजन्तु शीघ्रं
कविता वेशविधिर्न चित्तहारी ॥११०॥

कविता तो आत्मकला है । कविता न अभिनय है, न संगीत । कविबन्धुओ, जल्दी करो । छोड़ो इस भ्रम को । आकर्षक वेशविधि कविता नहीं हुआ करती ॥११०॥

कविता न गणेशहस्तशिल्पं
कविता व्यासमतिर्महाप्रकाशा ।
कविता यदि वर्त्ततेऽनुवादो
ननु स स्वस्य कृतः स्वयं कवित्रा ॥१११॥

कविता, गणेश का हस्तशिल्प नहीं, कविता है व्यास की महाप्रकाश मति। यदि कविता अनुवाद भी है तो वह भी कवि का स्वयं के द्वारा किया गया स्वयं का अनुवाद है ॥१११॥

यदिदं किलकिञ्चितं कपोल-
द्वयसन्धौ चिबुकाभिधे चकास्ति ।
प्रकृतेः पुरुषाय रञ्जितान्तः-
करणायाः कवितामिमां दुहामः ॥११२॥

यह जो पुरुष पर अनुरक्त प्रकृति की ठुड्डी पर उभरा किलकिञ्चित है इससे दुहा करते हैं हम कविता ॥११२॥

शिवयोर् दुहिता, तयोर्हि नित्यं
विलसन्ती, सततं हि नर्मगर्भा ।
प्रलयेऽप्यलया प्रसादसौम्या
कविते ! त्वं ननु नर्मदा, नमस्ते ॥११३॥

कविते, तू तो शिव और शिवा की पुत्री है। खेलती रहती है इन्हीं दोनों की गोद में। नर्म तेरा नित्य स्वभाव है। तू तो प्रलयकाल में भी विलीन नहीं होती। तेरा स्वभाव है प्रसादपूर्ण सौम्यता। तो कविते, तू तो नर्मदामाँई है। तुझे प्रणाम ॥११३॥

कविते ! जगदम्बिके ! त्वदीयं शतपत्रं ननु तुभ्यमर्पयामि ।
जननीं प्रविहाय शावकानां विरुतानि क्व परत्र वा पतन्ति ॥११४॥

एतद् रेवाप्रसादस्य काश्यपस्य द्विवेदिनः ।
सनातनस्य मे काव्यं चिरं रेवाप्रवाहतु ॥११५॥

॥ ॐ तत् सत् ॥

शतपद्यो वाक्यानुक्रमः

अथवा कवितात्र तन्त्रविद्या ९३
अथवा चितिदुर्ग ६५
अथ सा कवितैव लोक ४८
अथ सा कवितैव सिन्धु ७०
अनयोरनु ८ ईक्षा
अबला कविता ९८
अबलो वा न कविः ९८
अभिघान्वययोः ३ ईक्षा
अविकल्प ७९
असकौ हि कला ९ ईक्षा
इति भूमिकया १२ ईक्षा
उपदीकृतविश्व ४
ऋगहो कवितैव ९७
एतद् ११५
कलना ननु काल ५ ईक्षा
कलया निरपे ६ ईक्षा
कलया सुभगं ७ ईक्षा
कवयः कविता द्वि ७४
कवयस्त्यजत ९८
कविता कथिता कथा ९५
कविता कन्दरगा ८४
कविता करपात्र ३८
कविता कलपुत्रिका ४२
कविता काचन दिव्य ८३
कविता कापि रति ७९
कविता कालकला ४ ईक्षा
कविता कुटला ६०
कविता क्रियमाण ८५
कविता खलु तासकन्द-वार्ता ३९
कविता गरलं १०२
कविता गलदश्रु ७८
कविता गुरुनानक ७३
कविता चपलः २२
कविता चितिभित्ति ८५
कविता चितिसीमनि ४
कविता जनकात्मजाङ्घ्रि० ३५
कविता जनकात्मजा नमस्या ४७
कविता जनरोष ४१
कविता जमदग्नि ४६
कविता तपसां ५४
कविता तस्य ८१
कविता तु हला ७५
कवितात्मविवेक ८०
कविता त्वियमेव ८८
कविता दृष्टिकुटी ९६
कविता द्रुपदा ६०
कविता द्वयता २१
कविता धृतमुण्ड ६१
कविता न कवित्व ५२
कविता नकुलस्य १८
कविता न गणेश० १११
कविता न घृते वसां ५०
कविता न च राज ५६
कविता न जिजीविषा १०२

कविता नटना १५
कविता न धनाय ५०
कविता ननु रोहसेनमातुः ३६
कविता ननु विश्वनाथ ६८
कविता ननु सा मयू ७२
कविता न परस्य ४४
कविता न परोपजाप ६७
कविता न पलायनस्य मन्त्रः ५५
कविता न पुरस्क्रिया ६७
कविता न बुभुक्षितस्य पेया ५८
कविता न भविष्य ५१
कविता न मुमूर्षुता ५६
कविता नयनं शिवे ४३
कविता नयनेषु ९६
कविता न युधिष्ठिर ६२
कविता नरवानरे ८४
कविता न लघीयसे ५३
कविता नलिनी ३३
कविता न वणिग्वधूः ५७
कविता न व्रण ७४
कविता न समुद्र ५१
कविता न हला ७५
कविता न हि कापि ६९
कविता न हि कूटनीति ९९
कविता न हि जीविका कवीनां ५७
कविता न हि पत्रकारमैत्री ५२
कविता न हि मद्यपानगोष्ठी ६९
कविता न हि मेघदूत ७१
कविता न हि राजनीति १०९
कविता न हि राजनीतिहट्टे ९९
कविता न हि सेतु ७०
कविता न हि हंस ७२
कविता निजता ८१
कविता निजराष्ट्र ७३
कविता निजहस्त ३७
कविता निशि चक्र ३४
कविता निश्चय ७९
कविता परकीयता ५३
कविता परमस्य हृ ५
कविता परमाणुरक्त ७६
कविता परमो विभूतियोगो ३२
कविता परितृप्तिमा ५८
कविता परितोऽभि ४३
कविता परिदुर्बले २५
कविता परिपूर्ण ४५
कविता परिभोग ८०
कविता प्रणयस्य तद् २७
कविता प्रणयाग्निना १०४
कविता प्रतिभा ९६
कविता प्रतिमापरं २०
कविता प्रतिमूर्च्छते १६
कविता प्रथमा २३
कविता प्रलयश्चितेः ६
कविता प्रविरोपणं ७४
कविता प्रियदर्शि० ४०
कविता भगतस्य ५५
कविता भरतस्य भूत ४१
कविता भरतस्य राज ६६
कविता भारतरूसपाकमैत्री ३९
कविताऽभिनवस्य ९०
कविता भुजशालिनि ६४
कविता मणिपञ्जरे १०
कविता मधुनाभि १३
कविता मधुसंभृतं ३१

कविता मुक्तिमयी ८०
कविता मुरली त्रिलो २४
कविता मुरलीसखस्य ३०
कविता यदि कीर्त्तये १००
कविता यदि चेदु ५९
कविता यदि नास्ति ९१
कविता यदि भीष्मगा ६२
कविता यदि ना तदा ६१
कविता रतिमन्दिरे २२
कविता रामकथैव ८४
कविता वक्षसि कौस्तुभो ४३
कविता वटपादपो ८४
कविता वलयानि २६
कविता वा नहि ६९
कविता विभुता ८३
कविता विरतिर्यशो ३८
कविता विश्वमहौषधं ७६
कविता व्यास १११
कविता व्रतिनो १७
कविता शतपत्र० ९२
कविता शितिकण्ठ १४
कविता शिवराज ६४
कविता शिशुशङ्कर ८६
कविता स कपर्द्द १९
कविता सञ्चित ८५
कविता सुभगं २८
कविता सुभगाललाटबिन्दु: २७
कविता सुरभे: सुता ११
कविता सैनिकहेतयो ७१
कविता स्तनकुम्भ २९
कविताऽस्ति कला ११०
कवितास्थिचयो दधीचि ४६
कविता स्वगतं कवे: ३
कविता स्वप्नकथा १०३
कविता स्वस्तिवचो मनुष्यजाते: ३२
कविता स्वस्त्ययनं चराचरस्य ५४
कविता हनुमत्तनु ७७
कविता हृदयस्य कापि भाषा ७
कविता हृदयस्य कापि वाणी १०३
कविता हृदयस्य नाट्य ९
कविता हृदयस्य भावबन्धो ८९
कविता हृदयस्य वाक्यशेष: ९५
कविता हृदयस्य संविधानं १
कविता हृदयस्य संसिसृक्षा २
कविता हृदयाभि ८
कविता ह्यनुयोगिता ४९
कविते जगदम्बिके ११४
कविते यदि १०५
कवितेऽसि रुति १०७
कवितैव गतेऽपि ८६
कवितैव गुणत्रयी ८१
कवितैव च राष्ट्र ४०
कवितैव च शालु ७६
कवितैव जवाहरस्य ३७
कवितैव दधीचि ३९
कवितैव निषाद ३३
कवितैव वचोऽधि ३१
कवितैव तदा चमू ५९
कवितोच्छ्वसितं ३२
कवितोत्साहभृतां ५५
कवितोरसि शैल ८७
कवितोल्लासमयं स्वदानसत्रम् ५७
कवितौषधमुत्तमं १६
कवि रस्मि न १ ईक्षा

कृशताविभुता ८३
गणिकादुहितुः ३६
त्वमयेऽनुभवो १०७
द्रविणानि यशांसि १०१
धृतराष्ट्रस्य विपर्य्ययः ६२
न दशग्रीवभुजाटवी ४७
ननु भीमेन कृता ६२
ननु सा कवितैव काल ६३
न पुनः कापि ४६
न पुनर्यः किल ४६
न पुराणी न नवा ९५
न बलीवर्दकुले कडङ्गरं सा ५८
नलिनी जलसं ४४
नलिनीशशिनोः ८९
न शुकः कविता १०८
न हि पर्युषितं १० ईक्षा
न हि बाष्प ११ ईक्षा
निगमागमसंज्ञकौ १०६
निजसन्ततिभक्षणा ४५
नियतेर्नियतिः १५
परमस्य शिवस्य ९०
प्रणयद्रुत १ टि०
प्रतिभान्ति त एव ९२
प्रतिभायां कविता ९६
प्रथमस्य स वै ४८
प्रददाति यदा ४ ईक्षा
प्रबलं कवितुः ८२
मनुजः कविता ९७
मुखपद्मे निभृता ५८
मुमूर्षा कविता न १०२
यदिदं किलकि ११२
यदिदं हृदयस्य १०१
यदिवा हृदयस्थिता १०३
विधुरो रघु ८८
विषपानमहाव्रते ६८
विषमक्षणकालि ७९
विषयाः कवितैव ९३
विहितं सहकार १२
विहितप्रतिषिद्ध ६३
व्यवसायः कविता १००
शिवयोर्दुहिता ११३
सखिभिर्यदि २ ईक्षा
सुहृदः कविता स ४७
स्फटिकस्य शिला ९४